

100 पौधे हेतु आवश्यक बीजों की मात्रा

100 पौधे तैयार करने हेतु 1 से 1.5 किलोग्राम बीजों की आवश्यकता होती है।

बुआई हेतु उपयुक्त विधि

सीधे बीज की बुआई जर्मिनेशन ट्रे अथवा बयारी में 5 से 8 सेमी. रेत की परत बिछाकर।

रोपणी अवस्था में बीमारी एवं बचाव

प्रारंभ में पौधे अधिक कोमल होने के कारण उन्हें तेज धूप एवं गर्म हवा से बचाना आवश्यक होता है एवं किसी भी तरह की बीमारी दिखने पर फफूंदनाशक बैविस्टीन एवं कीटनाशक दवा एन्डोसल्फॉन का 01 प्रतिशत सांद्रता के घोल का छिड़काव समय-समय पर किया जाना अत्यंत आवश्यक है। इसके अतिरिक्त नीम की पत्तियों के घोल को तैयार कर इसका छिड़काव करना लाभप्रद होता है।



पॉटिंग मिश्रण

रेत, मिट्टी एवं केंचुआ खाद को



समान भाग में एवं रेत + मिट्टी + केंचुआ खाद को क्रमशः (1:1:1) के अनुपात में लेकर पॉलीथिन में मिश्रण बनाकर पौध रोपण किया जाना चाहिए।

पॉलीथिन का माप

नर्सरी में बयारी से पॉलीथिन में पौध रोपण करते समय पॉलीथिन का माप 15x25 सेमी. होना चाहिए।

उपयोग

लकड़ी जलाऊ लकड़ी के रूप में एवं फल औषधीय में उपयोग किए जाते हैं।

इसका प्रयोग त्रिफला, च्यवनप्राश आदि औषधि तैयार करने में भी किया जाता है। इसमें भी हर्षा की भांति फल की व्यवसायिक मांग अत्याधिक होने के कारण वन क्षेत्रों में प्राकृतिक पुनरोत्पादन काफी कम देखा गया है।

अन्य उपयोग

बहेड़ा कब्ज को दूर करने वाला होता है। बवासीर को खत्म करता है, आंखों व दिमाग को स्वस्थ व शक्तिशाली बनाता है, यह कफ को खत्म करता है तथा बालों की सफेदी को मिटाता है।

संपर्क :

डॉ. अर्चना शर्मा

वरि. वैज्ञानिक

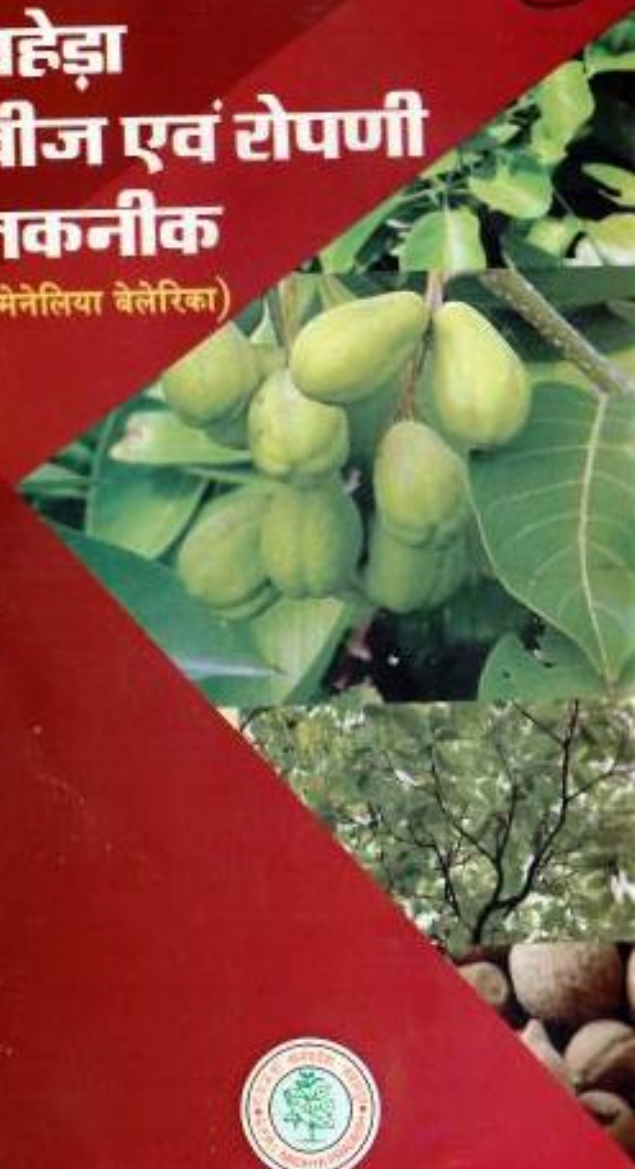
राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर (म.प्र.)

फोन: (0761) 2666529, 2665540

Amrit Offset # 0761-2413943

बहेड़ा बीज एवं रोपणी तकनीक

(टरमेनेलिया बेलेरिका)



बीज प्रभाग

राज्य वन अनुसंधान संस्थान

पोलीपाथर, जबलपुर (म.प्र.) 482008

www.mpsfri.org

बहेड़ा - बीज एवं रोपणी तकनीक

प्रजाति का नाम - हर्रा

वानस्पतिक नाम - टर्मोमेलिया बेलेरिका



परिचय

यह कॉम्ब्रिटेसी कुल का वृक्ष है।

पहचान

इस वृक्ष की अधिकतम ऊँचाई 40 मीटर एवं 1.5 से 2.5 मीटर गोलाई वाला होता है। यह वृक्ष गहरे भूरे रंग की छाल के साथ साथ उस पर पाये जाने वाले काष्ठीय कांटे एवं पत्रक के ऊपर की तरफ जोड़े में पाये जाने वाली ग्रंथियों के कारण पहचाना जाता है। इसके पत्ते लगभग 10 से 20 सेमी. तक लंबे तथा 06 से 09 सेमी तक चौड़े होते हैं। इसका फल अण्डे के आकार का गोल और लंबाई में 03 सेमी तक होता है।

प्राप्ति स्थान

यह हर्रा की भांति भारत के लगभग सभी भाग में पाया जाता है। इसके साथ-साथ यह प.बंगाल असम एवं दक्कन पठार पर हर्रा वृक्षों के साथ पाया जाता है। म. प्र. एवं छ.ग.में यह सिवनी, सरगुजा, कोरबा, मण्डला, जबलपुर, बैतूल आदि जिलों में पाया जाता है।

स्थानीय कारक (Locality Factor)

यह हर्रा वृक्ष की भांति लेटेराइट, रेतीली दोमट, काली कपासी एवं विभिन्न मृदा में पाया जाता है, जिसमें अधिक से अधिक जल धारण क्षमता होती है। यह प्रकाशपेक्षी एवं पाले के प्रति संवेदनशील परंतु सूखा प्रतिरोधी वृक्ष है।

बीज चक्र

प्रतिवर्ष बीज उत्पादित होता है। परंतु एक वर्ष के अंतराल पर बीज का उत्पादन अधिक मात्रा में होता है।

ऋतुजैविकी (Phenology)

वृक्ष में मई से जून के मध्य फूल आते हैं। वृक्ष में नवम्बर से जनवरी माह के मध्य फल लगते हैं एवं फरवरी से मार्च में पककर तैयार होते हैं। इसके फल अण्डाकार, धूसर रंग के एवं 2.3 से 2.6 सेमी. के होते हैं।

प्रतिकिलो बीजों की संख्या

प्रतिकिलो बीजों की संख्या 400 से 450 तक होती है।

जीवन क्षमता अवधि

सामान्य भंडारण में बीज की जीवन क्षमता अवधि 09 से 12 माह होती है।



सुसुप्तावस्था

बीज में किसी भी तरह की सुसुप्तावस्था नहीं पायी जाती है।

अंकुरण क्षमता

बीज की अंकुरण क्षमता 60 से 70 प्रतिशत तक होती है।

पौध प्रतिशत

पौध प्रतिशतता 50 से 55 प्रतिशत होता है।

उपयुक्त भंडारण विधि

सील्ड प्लास्टिक जार में भण्डारित करने पर जीवन क्षमता अवधि 1.5 से 02 वर्ष तक रहती है।

उपयोगिता की अवधि

03 से 18 माह के अंदर उपयोग में लिया जाना चाहिए।

बुआई पूर्व उपचारण

20% सांद्रता के सल्फ्यूरिक अम्ल के साथ 10 मिनट तक डूबोकर उपचारित करने के पश्चात साफ पानी से धोकर बुवाई करना उपयुक्त होता है।



अंकुरण हेतु उपयुक्त माध्यम

बीज के अंकुरण हेतु उपयुक्त माध्यम रेत है।

बुआई का समय

बुवाई हेतु उपयुक्त समय मार्च से अप्रैल होता है।